

## मई दिवस के अमर शहीदों को शत्-शत् नमन

प्रिय साथियों,

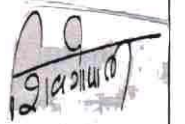
यह मई दिवस की 125वीं वर्षगांठ है। जैसा कि आप सभी को विदित है कि 1 मई 1886 को अमेरिका के शिकागो शहर में 8 घण्टे की ड्यूटी की मांग को लेकर सफेद झण्डे के साथ सड़क पर उतरे सैकड़ों श्रमिक पुलिस की गोलियों के शिकार हो गये और उनके खून से सफेद झण्डा लाल हो गया जो आज भी हमें उन अमर शहीदों की कुर्बानियों की याद दिलाता है। मई के उन अमर शहीदों ने शायद यह सोचा होगा कि उनकी शहादत से तमाम मजदूर आवाम का भला हो जायेगा पर आज भी उन अमर शहीदों के ख्वाब अधूरे हैं और सारी दुनियाँ में मजदूरों के हालात दिन ब दिन खराब होते जा रहे हैं। एक बात तो सच है कि शिकागो के अमर शहीदों ने दुनियाँ के तमाम मजदूरों को संगठित होकर संघर्ष करने का रास्ता दिखाया। यही नहीं इस घटना के विरोध करने पर जहाँ तमाम मजदूरों को जेल और यातनायें दी गईं वहीं उनके अगुआ लूशी पर्सनस, अगस्त स्पाइस, एडोफ फिशर्स और जार्ज एजिलिस को फाँसी पर लटका दिया गया। इन घटनाओं ने दुनियाँ के सारे मजदूरों को हिला देने का काम किया और तभी से “इन्टरनेशनल सोशलिस्ट काँग्रेस” के आह्वान पर सारी दुनियाँ में 1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाने का काम किया जाता है।

हमारे देश में भी वैसे तो केन्द्र और राज्य सरकारें इस अवसर पर मजदूरों के लिए कुछ नई योजनाओं की घोषणा करती हैं, और मजदूरों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करती हैं परन्तु हकीकत यह है कि भारत वर्ष का मजदूर बराबर शोषण और असमानता की चक्की में पिस रहा है। इस देश में 95 प्रतिशत मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करता है जिनके लिए न तो कोई न्यूनतम वेतन, न कार्य के घंटों का निर्धारण और न ही कोई सामाजिक सुरक्षा है। मालिक जब चाहे उन्हें नौकरी पर रखें और जब चाहे निकाल दे, इनके लिए श्रम कानून बेमानी है जो कही भी लागू नहीं होते। दूसरी ओर मजदूर आंदोलन राजनीति, जाति, धर्म, भाषा के नाम पर विभाजित होकर हर समय बचाव की मुद्रा में रहता है जिससे मजदूरों का शोषण बराबर बढ़ता जा रहा है। हालांकि हाल ही में महंगाई, बेरोजगारी, श्रम कानूनों का अनुपालन, निजी क्षेत्र को न बेचे जाने के सवाल पर सभी श्रम संगठनों का एक मंच पर आना और 23 फरवरी 2011 को दिल्ली में हुए अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक प्रदर्शन में जिस तरह लामबंद होकर मजदूरों की एकता का परिचय दिया है वह निश्चय ही एक आशा की किरण है। ऐसी एकता ही मई के उन अमर शहीदों को एक सच्ची श्रद्धाजलि हो सकती है।

आइये हम सब मिलकर मई दिवस के अमर शहीदों को श्रद्धापूर्वक नमन करें और उनके खून से रंगे इस लाल झण्डे को मजबूती से पकड़कर मजदूर आंदोलन को इतना सशक्त बनाने का प्रयास करें जिससे देश के असंगठित क्षेत्र में कार्य कर रहे 95 प्रतिशत श्रमिकों के हितों की रक्षा की जा सकें।

शुभकामनाओं सहित।

आपका साथी



(शिव गोपाल)  
महामंत्री